पंचम अध्याय

-- पचपन खम्भे लाल दीवारें - उपन्यास में प्रतिबिंबित पारिवारिक विभिन्न समस्याएँ --

अध्याय पंचम

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में प्रतिबिंबित पारिवारिक विभिन्न समस्याएँ --

मानव समाज का कोई भी युग ऐसा नहीं रहा है। जो समस्याओंसे घिरा हुआ ना हो। यह अलग बात है कि समय और परिस्थिति के अनुसार समस्या का रुप बदलता रहा हो पर हम ऐसा नहीं कह सकते कि किसी विशिष्ट युग में कोई समस्या थी ही नहीं। साहित्य समाज का दर्पण है। आज के भारतीय साहित्य में समाज की वर्तमान व्यवस्था के अनुरुप संघर्ष, मानसिक विप्लव ,निराशा एवं कुण्ठा के भाव व्यक्त हो रहे हैं। साहित्य की विषय वस्तु समाज से प्रभावित होती है। साहित्यकार की दृष्टि समाज के समग्र शरीर पर रहती है। ` उषा प्रियंवदाजी ने अपनी ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` औपन्यासिक कृति में सामाजिक दायित्वों का निर्वाह किया है। ` उन्होंने एक ओर जहाँ सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा ,विशुद्ध रुप से मानवीय धरातल पर की है, वही दूसरी ओर पूर्वयुगीन जर्जर रुढिगत मूल्यों का खुले रुप में बहिष्कार भी किया है, साहित्य का उद्देश्य कोरा आनन्द प्रदान करना न होकर सांस्कृतिक तथा मानसिक दोनों धरातलों का परिष्कार करना होता है और यह तभी सम्भव है जब साहित्य वैयक्तिक कुण्ठाओं और अभावों का ही चित्र न होकर सम्पूर्ण समाज और जनसमुदाय की कथाओं, अभावों और संघर्षों को मुक्ति पथ तथा प्रगति पथ की ओर ले जाने की राह सुझायें महिला लेखिकाओं ने इस ओर ध्यान दिया है।` [१] इसलिए कोई भी सजग लेखक और लेखिका किसी भी प्रकार की समस्या को नजर अंदाज कर सकती। यही कारण है कि ` उषा प्रियंवदाजी ने भी ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में अपने समाज को

---

१ डॉ.शीलाप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ - संस्करण प्रथम,विद्या विहार प्रकाशक,कानपुर - पृ.५४।

और होनेवाली क्रियाकलापों को खुली आँखों से देखा और उसी को अपने उपन्यास में चित्रित किया है।

`पचपन खम्भें लाल दीवारें` उपन्यास में `उषा प्रियंवदाजी` ने एक ऐसा परिवार दिखाया है कि जिसमें घर का प्रमुख बीमार है, कुछ काम नहीं कर सकता और पढी-लिखी बडी लड़की होने के नाते सुषमा को ही नौकरी करके अपने परिवार का गुजारा करना पड़ता है। बस इसी बात से नाना प्रकार की समस्याएँ पैदा हो गई है। उषा प्रियंवदा नारी है, कामकाजी महिला है इसलिए नारी से संबंधित या दूसरे अन्य प्रकार की कोई भी समस्या उनके नजरों से छिप ना सकी और उन्होंने आज के वर्तमान युग की ज्वलंत समस्या को बहुत ही मार्मिकता से चित्रित किया है जो निम्नलिखित प्रकार से है --

विवाह मूलत: व्यक्ति के धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए तथा परिवार के लिए तथा परिवार के कल्याण के निमित्त सम्पन्न होने वाला एक पवित्र संस्कार है। धीरे-धीरे लोग यह मानने लगे कि यह एक सामाजिक अनुबन्ध है। जिसमें व्यक्ति मुख्यत: अपनी भलाई तथा व्यक्तिगत सुख-सुविधा के लिए सम्मिलित होता है। विवाह मात्र आर्थिक कारणों से ही आवश्यक नहीं है। प्रत्युत अनेक भावात्मक तथा दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी उससे होती है।

उषा प्रियंवदाजी ने विवाह के सम्बन्ध के अनेक बदलते दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है, विवाह पूर्व की समस्या और वैवाहिक समस्याओं का भी उन्होंने चित्रांकन किया है।

विवाह पूर्व की समस्याएँ --

आज माता पिता के समक्ष कन्या के जन्म लेते ही उसके विवाह की समस्या खडी हो जाती है। समस्यायें तो पालन पोषण, गृहकार्य में उन्हें दक्ष बनाने एवं मानसिक रुप से समृध्द करने की, शिक्षा दिक्षा सम्बन्धी भी होती है। यौवन की देहरी पर चरण रखते ही कन्या का विवाह जब तक नहीं हो जाता, तब तक वह भार बनी रहती है। प्रस्तुत `पचपन खम्भें लाल दीवारें` उपन्यास में सुषमा के अविवाहित

जीवन की कहानी अनेक समस्याओं को समेटते हुए प्रस्तुत की गई है। सुषमा के माता-पिता अपनी बुरी परिस्थिति वश उसकी शादी नहीं करते। सारे परिवार का भार अकेले सुषमा पर ही आ जाता है। लेकिन बेटियों के प्रति परेशान है। छोटी बेटी नीरु की शादी बड़े धूमधाम से कर देते है परन्तु सुषमा के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभा न सकने को अपराध भावना से वह ग्रस्त है। सुषमा की जली-कटी बातें सुनकर वह उसे भरे गले से कहती है --" तुम्हें तो कहने का हक्क है, कहो। तुम्हारे माँ-बाप ऐसे निकले कि अपना फर्ज भी न निभा सके।"[२] अपनी बहन निरुपमा की शादी सुषमा धुमधाम से करवाती है। परंतु शादी में उसकी तबीयत खराब हो जाती है। सुषमा को बीमार देखकर सुषमा की मामी कहती है -- " एक लड़की का गला काट दूसरी का ब्याह रचाकर बड़ी बीबी ने अच्छा नहीं किया। सुषमा के कन्धे पर छ:हजार रुपये का बोझ डालना कहाँ का न्याय है।"[३] तो लोग विवाह के पूर्व ऐसे बाते करते है।

बदलती परिस्थितियों ने विवाह की वय में स्वयं ही वृध्दि कर ली है।

(१) अधिक वय अनब्याही युवतियाँ या अविवाहित प्रौढा की समस्या --

आज के युग में युवक व युवतियाँ देर से विवाह करना उपयुक्त समझते है। पालने में शादी होने के दिन बीत गये है किन्तु बढती उम्र की भी एक सीमा होती है जिसे पार करने के बाद युवक अथवा युवती के लिए चुनाव का प्रश्न रह जाता। वैसे ही अविवाहित प्रौढा के बारे में आधुनिक समाज भी अत्यंत संवेदनक्षम एवं सतर्क होता है। नारी समाज के लिए तो प्रौढ कुमारिका का विषय चिंता के साथ-साथ चर्चा का एक दिलचस्प विषय बन जाता है। बहुत से वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक कारणों से इन युवतियों का समय पर विवाह नहीं हो पाता। ऐसी नारियों

---

२ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६। पृ.८४।

३ - वही - ,, पृ.११२।

की समस्या काफी गहरी और गम्भीर होती है। आज की बुध्दिजीवी, पढी-लिखी, मध्यवर्गीय युवती की वह नीयत बन गई है। उसे स्वंय एहसास है कि वह स्थिति को पार कर चुकी है जब कि कोई उसे पत्नी के रुप में स्वीकार कर सके।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मिस शास्त्री भी जो उपन्यास की नायिका सुषमा की अध्यापिका सहेली है, एक अविवाहित नारी है। अपने जीवन के अभावों के कारण उसका मानस विकृत हो गया हैं। मिस शास्त्री तपती धरती की तरह असीम प्यासी है। वह जिस वस्तु के लिए तृषित है उसे हेय एवं निकृष्ट मानकर वह उससे मुँह मोड लेती है। जीवन की निराशाओं और अभावों ने उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण ही विकृत कर दिया है। वह जीवन और संसार के प्रति कटु हो गयी है। सुषमा को मिस शास्त्री उस तुषार की तरह लगती है जो अपरिपक्व फलों तथा अर्ध- विकसित कलियों को कठोरता से रौंद जाती है। ये युवती समाज में विकृत विचार और अफवाएँ फैलाने का काम करती है।

संक्षेप में वह एक सामाजिक समस्या हो है और इसका सर्व प्रमुख कारण उसका वैंवाहिक जीवन से वंचित हो जाना है। ऐसी ही एक उपन्यास में नायिका सुषमा अन्य नारी पात्रों और समाज की दृष्टि में एक प्रश्नचिन्ह और समस्या बन गई है। सुषमा एक उच्चशिक्षित, आधुनिक विचारों की युवती है, एक साधारण युवती की प्रवृत्ति के अनुसार उसके भी कुछ सपने और इच्छाएँ है। वह भी एक आदर्श गृहीणी बनना चाहती है। परंतु वह अंत तक एक शापग्रस्ता की तरह अकेली, एकाकी जीवन जीने के लिए मजबूर करा दी जाती है। और इसी गंदी विकृत मनोवृत्ति का चित्रण उषा प्रियंवदाजी ने चित्रित किया है।

सुषमा मध्यवर्ग की एक शिक्षित युवती है उनका अविवाहित रहने का कारण उसकी पारिवारिक, आर्थिक जिम्मेदारी है। पूरी गृहस्थी चलाने की जिम्मेदारी से वह अपने आप को मुक्त नहीं कर सकती। सुषमा इतनी स्वार्थी मनोवृत्ति की नारी नहीं है, कि घर के स्वास्थ और खुशी को कुचलकर अपना आनंद पाने की कोशिश करें। इस तरह तैंतीस साल से अधिक उम्रवाली सुषमा वैंवाहिक गार्हस्थ

और एक आस्थामयी प्यार भरे जीवन से वंचित रह जाती है। समाज में ऐसी अविवाहित प्रौढ नारियों के बारे में तरह-तरह की अफवाहें फैली रहती है। उनकी हमेशा अवहेलना और उपेक्षा होती है। सुखों से वंचित ऐसी युवतियाँ अगर अपने सुखों का कोई मार्ग और सहारा स्वयं ढूँढे तो वह भी समाज को नहीं रुचता। सुषमा की शादी जब एक असंभव विषय बनकर रह जाती है तब सुषमा बात को टालने के लिए कहती है --`जीवन में बहुत महत्वपूर्ण काम है,सिर्फ विवाह ही तो नहीं और देशों में देखिए बिना शादी किए ही औरतें कैसे मजे से रहती है।`[४] इस बात के जवाब में सुषमा की मौसी कहती है, --`जैसे रहती है, वह मुझे पता है। तुम एकपुरुष मित्र बनाकर तो देखो, तुम्हारी अम्मा सबसे पहले तुम्हारी खबर लेगी। हमारा समाज किसी को जीने नहीं देता।`[५] और बात बिल्कुल सही निकलती है, सुषमा और नील की दोस्ती को देखकर सुषमा की माँ आशंकित और सतर्क हो जाती है वह सुषमा को सुचना देती है --`देखो सुषमा, तुम समझदार हो,कभी ऐसा कुछ न करना जिससे किसी को कुछ कहने का अवसर मिले। तुम्हारी वजह से अभी हम चार जनों में सिर ऊँचा करके रह रहे है।`[६]

इस प्रकार अधिक वय अनब्याही युवतियों को खुशी का हर एक दरवाजा बंद किया जाता है। सुषमा का जीवन व्यक्तिगत नहीं रह चुका है,तो वह एक सामाजिक चर्चा का विषय बनता है क्योंकि नील की माँ और बहन सुषमा के प्यार में किसी और से शादी नहीं कर रहा है। समाज सुषमा जैसी सरल और ईमानदार युवतियों का जीना मुश्किल कर देता है केवल एक अविवाहित युवती होने के कारण सुषमा की शिक्षा, उसकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा सभी कुछ समाज की नजरों में निरर्थक सा हो जाती है। सुषमा जब एक प्राइवेट कॉलेज में नौकरी कर रही थी तब वहाँ के रईस सेक्रेटरी ने सुषमा को अनेक वस्तुओं के प्रलोभन दिखाएँ फिर सुषमा वह नौकरी छोड देती है। तो ऐसी युवतियों को स्वस्थ और विधायक रास्ते पर कैसे

---

४ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण,१९७६,पृ.१०।

५ - वही - ,, पृ.११।

६ - वही - ,, पृ.८९।

लाया जाय यह एक बहुत बडी समस्या है।

सार रुप में यही कहा जा सकता है कि आज समाज में शिक्षा और नौकरी करने के कारण युवतियों की उम्र बढती चली जाती है पैसा कमाकर वह परिवार को सहारा देती है इसलिए माँ-बाप भी उनके शादी के तरफ ध्यान नहीं देते। और विवाह उम्र निकल जाने पर योग्य वर मन के अनुसार वर मिलना कठिन हो जाता है यह आज के समाज की बडी समस्या बनी हुई है। हम इसको देखते है इसी समस्या को उषा प्रियंवदाजी ने बहुत ही स्वाभाविक और मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।

<u>विवाह पूर्व गर्भधारण या कुँवारी मातृत्व की समस्या</u> --

विवाह के पुर्व प्रेमी प्रेमिकाओं के बीच शारीरिक सम्बन्ध किसी भी युग में मान्य नहीं रहा। किन्तु आज की यह आधुनिक सामाजिक स्थितियों में प्रेमी युग्मों के बीच अंलिगन, चुम्बन तो अति सामान्य हो ही गये है। अनेक स्थलों में सम्भोग भी अमान्य नहीं है। वैसे ही एक अविवाहित का माँ बनना काफी पुरानी समस्या है। विवाह और मातृत्व का सम्बन्ध स्त्री के लिए सामाजिक रीतियों - नीतियों के अनुसार ही सुविचारी तथ्य रहा है। पुन: नारी की सुरक्षा के लिए भी मातृत्व का सम्बन्ध विवाह से जोडा गया है चूँकि बच्चा पुरुष के शरीर से नहीं जुडता इसलिए वह कभी भी उससे पीछा छुडा सकता है। अपराध में दोषी ठहराया जाता है। केवल स्त्री को ही हमारी सामाजिक पंरपंरा का मानो नियमसा बन गया है कि हमेशा विश्वामित्र चला जाता है, मेनका यही रह जाती है ऐसे ही परम्पर सम्पर्क से प्रेम निर्माण होता है। इन सम्बन्धों की परिणती कभी-कभी लडकी के गर्भवती हो जाने में होती है। तो प्रेमी --' घरवालों की इजाजत नहीं ' का बहाना बनाकर उसे छोड देता है। या कभी इस विषय को लेकर दोनों में मतभेद हो जाते है। पुरुष का नारी को छोडकर चला जाना तो ठीक है किन्तु नारी का समाज जीना मुश्किल कर देता है। कभी-कभी सामाजिक और मानसिक यंत्रणाओं से ऊबकर नारी आत्महत्या के लिए प्रवृत्त होती है। उषा प्रियंवदा जी ने प्रस्तुत ' पचपन खम्बे लाल दीवारें ' उपन्यास में कुँवारी मातृत्व की समस्या का चित्रण किया है सुषमा के कॉलेज में एक नयी अध्यापिका आ जाती है।

यह स्वाति सेन बँगलाकी पार्ट टाईम लेक्चरर है। लडकियों के होस्टल के एक कमरे में वह रहती है। स्वाति सेन किसी युवक के साथ प्रेम करती है फलस्वरुप वह कुमारी माता बन जाती है। परंतु उसका प्रियतम कायर निकलता है अपने अजन्मे बच्चे के कारण समाज में पीडित और लांछित होने से बचने के लिए स्वाति नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या का रास्ता अपनाती है। परंतु आत्महत्या का प्रयत्न असफल होता है और स्वाति की बदनामी होती है। उस दिन सारे स्टाफ रुम में उसकी चर्चा छिड जाती है, मिसेज पुरी कहती है कि --' सामाजिक मापदण्डों का जो उल्लघंन करता है, उसे दण्डित होना ही पडता है सुषमा, मुझे स्वाति से बिल्कुल भी सहानुभूति नहीं है।'

'आपके सामाजिक मापदण्ड यह कहते है कि आप सबके सामने किसी के व्यक्तिगत जीवन की धज्जियाँ उडा दीजिए ? हरेक का जीवन एक ऐसा अनुलंघनीय दुर्ग है जिसका अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं है।' [७] तो चारों ओर उसकी मानहानि होती है। उसका जीवन दु:खी हो जाता है। दुनिया की आलोचना भी चुभती नजरों के कारण वह अपने बच्चे से किसी न किसी प्रकार से छूटकारा पा लेती है और नयी शादी करके एक कृत्रिम, औपचारिक जीवन को स्वीकार करती है।

उषा प्रियंवदाजी विवाहपूर्व गर्भधारण की समस्या की ओर केवल इशारा करती है संकेत करती है कि विवाह के पश्चात होनेवाली संतान को ही समाज मान्यता देता है। विवाह से पूर्व जो लडकियाँ गर्भधारण करती है या कुवारी माता बच्चे को जन्म देती है। ऐसी नारियों को समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है और बदनामी के दृष्टि से गर्भ भ्रूणहत्या करवायी जाती है पर आज समय बदल गया और आज शिक्षा और आर्थिक स्वावलंबन के कारण समाज में कुछ नारियाँ कुमारी माता के रुप में आगे आ रही है और किसी सीमातक समाज उन्हें स्वीकार भीं कर रहा है।

---

७ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.२९।

दहेज की समस्या --

दहेज की समस्या प्राचीन काल में नहीं थी, किन्तु लोग कन्या का विवाह आभूषणों से अलंकृत करके करते थे। जब से नारी की कल्पना संपत्ति के रुप में दिया जाने लगा। धीरे-धीरे इस प्रथा ने अत्यंत विकट स्वरुप धारण किया। वर और कन्या से भी अधिक महत्व दहेज को ही दिया जाने लगा। इस कुप्रथा का एवं नारी जीवन के इस कलंकित पक्ष का वर्णन उषाजी ने प्रस्तुत उपन्यास `पचपन खम्भें लाल दीवारें` में किया है सुषमा की शादी नहीं हो पाती क्योंकि माता-पिता आर्थिक विवशता के कारण सुषमा के विवाह के लिए दहेज की सामग्री जुटा नहीं सकते। दहेज प्रथा एक सामाजिक रोग है, जो शनैःशनैः समाज को निष्प्राण सा बना देता है। सामाजिक बुराई ने जितना सामाजिक अहित किया है, शायद ही अन्य बुराई ने किया हो। दहेज प्रथा से कई युवतियों का जीवन नारकीय हो जाता है, कई परिवार नष्ट हो जाते है और कई समाज कलंकित हो जाते है। जैसे सुषमा के दो छोटी बहनों की शादी भी दहेज के बिना नहीं हो सकती इसलिए सुषमा को उनके लिए हर प्रकार से दहेज जुटाने की जी तोड कोशिश करनी पडती है। बहनों के दहेज का प्रबंध करने में सुषमा की अपनी जिंदगी बरबाद हो जाती है। सुषमा को आजन्म अविवाहित रहना पडता है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति भी अपने पुत्रों के विवाह में दहेज की कामना करते है। इस उपन्यास में वकील साहब अपने पुत्र का विवाह ऊँचे घर में करना चाहते है, ताकि अधिक से अधिक दहेज मिले ... वकील साहब को बहुत प्रतिष्ठा थी, `वह नारायण की शादी बडे ऊँचे घर में करना चाहते थे। उनकी पत्नी ने सुषमा के लिए बहुत हठ किया, पर वकील साहब ने नारायण की शादी कहीं और तय कर दी। ... सुना उस लडकी के पिता सिविल सर्जन थे और दहेज से घर-आँगन भर गया था।` [८] आज समाज में दहेज की कुप्रथा का प्रचलन बढ रहा है। जिसके कारण विवाह का धार्मिक महत्व

---

८ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.३९।

कम होकर उसे एक सौदे का रुप प्राप्त हुआ है। इस प्रथा के सन्दर्भ मे डॉ.भटनागर लिखते है --` आज हिन्दू समाज मे विवाह के लिए अभाव नहीं वरन् गिरी हुई नैतिकता है, जिस समाज मे विवाह का आधार धन है, वहाँ आर्थिक प्रश्न कोई महत्व नहीं रखता। अमीर - गरीब सभी परिवारों मे इस गिरी हुई नैतिकता के दर्शन होते है,जो वैवाहिक असंगतियों को जन्म देती है। यदि गरीबी मिटा दी जाये तो भी दहेज प्रथा उस समय तक नहीं मिट सकती जब तक समाज का स्तर ऊँचा नहीं उठता। `[९]

आज समाज मे ` देहज` समस्या भयानक रुप धारण किये हुए खडी है। दहेज के कारण कितनी युवतियों को जान से हाथ धोना पडता है कितनी युवतियाँ अनब्याही रह जाती है। इसी बात का संकेत उषा प्रियंवदाजी ने ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास मे किया है -- सुषमा और नीरु के माध्यम से दहेज के कारण ही सुषमा का विवाह नहीं हो पाया और नीरु के दहेज के लिए भी सभी चिंतीत है। तो उषा प्रियंवदाजी यह बताना चाहतीहै कि चाहे लडकी पढी-लिखी है सुन्दर है,कमाऊ है पर उसे दहेज रुपी संकट का सामना करना ही पडता है।

/विवाह की समस्या --

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास मे विवाह की समस्या को चित्रित किया है विवाह के समस्या के रुप मे सबसे पहला कारण दहेज आता है नीरु और सुषमा के विवाह के लिए एक बडा कारण दहेज ही है। दूसरा कारण उच्चशिक्षा भी हो सकता है क्योंकि फिर अपने रुचि के अनुसार वर ढूँढना कठिन हो जाता है इसके अतिरिक्त जाति-पाँति,अमीर-गरीब आदि बातें विवाह की समस्या बनकर आगे आती है। उदा.` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास मे वकील साहब अमीर होने के कारण उन्होंने सुषमा जैसी गरीब लडकी से शादी नहीं की। ` वह नारायण की शादी बडे ऊँचे घर मे करना चाहते थे। `[१०]

९ समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द - डॉ.महेन्द्र भटनागर,ज्ञानभारती प्रकाशन - प्रथम संस्करण,१९८२, पृ.१४८।

१० उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें -- राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण १९७६, पृ.३९।

समाज में आज हम विवाह से सम्बन्धित जो भी समस्याएँ देख रहे हैं उनमें प्रमुख समस्या आर्थिक है और जाँति-पाँति की है` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में इन्हीं समस्याओं पर उचित ढंग से प्रकाश डाला गया है।•

अनेमल विवाह की समस्या --

प्राचीन काल में धनाभाव तथा अन्य कई कारणों से लडकियों का अनमेल विवाह किया जाता था। परंतु आज की पढी-लिखी नारी भी कभी-कभी किसी के व्यक्तित्व से अत्यधिक आकर्षित होने पर स्वेच्छा से अनमेल विवाह करती है। जैसे सुषमा और नील का विवाह भी यह एक अनमेल विवाह क्योंकि नील सुषमा से पाँच साल बडी है यह शादी हुई नहीं लेकिन हो गई होती तो अनमेल विवाह ही होगा। वैसे ही प्रस्तुत` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में मीनाक्षी का अनमेल विवाह है। मीनाक्षी एक साधारण नारी है, जो मानसिक और बौध्दिक जरुरतों को अनदेखा कर एक साधारण,स्वस्थ,सरल सुख-सुविधाओं से भरा-पूरा जीवन जीना चाहती है। इसलिए मीनाक्षी अपना विवाह कलकत्ता के एक बिजनेसमन के साथ करने का निश्चय कर लेती है। उनका नाम दिनेश है। लेकिन दिनेशजी की उम्र मीनाक्षी की उम्र से बहुत बडी है। उनके आचार-विचार,रहन-सहन परिस्थिति परिवेश अत्यंत भिन्न है इसलिए यह मीनाक्षी का अनेमल विवाह है। मीनाक्षी बुध्दिवादी है,तो उसके पति एक नितांत व्यावहारिक धनी व्यावसायिक है। अपनी सहेली सुषमा को खत लिखते हुए वह लिखती है --` मैं अच्छी तरह समझ रही हूँ कि दिनेशजी का और मेरा संसार बिलकुल भिन्न है। उनसे विवाह करने में एक नयी अपरिचित दुनिया में प्रवेश करुँगी। वह हमेशा कॉकटेल पार्टी, डिनर एण्ड डांस तथा ब्रिज की बातें करते है कौन-सी कार की बॉडी और किसका इन्जन .... मैं अगर उसमें जाँ पाल सार्त्रे की बात छेड दूँ तो वह कितने चकित होंगे। पर सच बात यह है सुषमा,कि मैं अपने इस जीवन से बुरी तरह ऊब गई हूँ। लेक्चरर्स और टयूटोरियल में बँधी हमारी संकुचित जिन्दगी,छोटे-छोटे झगडे,पर-निन्दा-यह मेरा ध्येय न था। शायद तुम मुझे पलायनवादी कहो,पर जब एक द्वार मेरे सामने खुल रहा है तो मैं उससे क्यो न

निकल आऊँ। ११

अनमेल विवाह की समस्या व्यक्ति की मजबूरियों के साथ सामाजिक परिस्थितियों के कारण भी निर्माण हो जाती है। स्वाति सेन भी इसी समस्या की शिकार बन जाती है उसका प्रेम असफल हो जाता है, कुमारी माता बनकर वह समाज के द्वारा प्रताड़ित ही हो सकती है। इसलिए वह अपने अतीत के सारे चिह्न मिटाकर एक नितांत नए मार्ग को अपना लेती है एक धनिक प्रौढ़ आदमी से वह शादी कर लेती है। स्वाति का यह दोहरा व्यक्तित्व, एवं जीवन की त्रासदी समाज के कारण ही निर्माण हो चुकी है। समाज अगर उसे उसके बच्चे के साथ उसके माते से चैन से जीने देता, तो उसका अनमेल विवाह न हो पाता।

जब लड़की की उम्र बढ़ जाती है, या आदमी का दूसरा विवाह होते है। बुध्दि विचारों में समानता ना होने के कारण पति-पत्नी का जीवन दु:खमय हो जाता है और पूरे-परिवार पर ही असर पड़ जाता है। इन्हीं तथ्यों की ओर 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में 'उषा प्रियंवदाजी ने संकेत किया गया है।

पुर्नविवाह की समस्या --

प्राचीन काल से पुर्नविवाह की प्रथा को मान्यता प्राप्त है, किन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में ही हिन्दू संस्कृति की यह एक विडम्बना ही है कि पत्नी के मरने के पश्चात पति का दूसरा, तीसरा विवाह करने की सुविधा है (उसे दहेजू वर कहते है) और वही पुरुष के पुर्नविवाह के कारण निर्माण हुई समस्या एक जटिल समस्या (दुहाजू पर) है क्योंकि पुरुष जिस स्त्री के साथ शादी करता है, उसकी वह पहली ही शादी होने के कारण उसे अनेक अपेक्षाएँ होती है, परंतु वे सब असफल रह जाने के कारण ऐसे दाम्पत्य का वैवाहिक जीवन असंतुष्ट होता है। जैसे -- 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में सुषमा की माँ अपने पति की दूसरी पत्नी है फिर भी उनके कोई अरमान पूरे न हुए। वह सारी खीझ और झुँझलाहट

---

११ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ. ४१।

परिवार पर ही निर्भरता है। पति अशक्त। `[१२]

भारतीय संस्कारों में पली नारी, अपने संस्कारों को पूर्णत: भूल नहीं सकती। भूतपूर्व पति, अतीत जीवन को अपने से अलग न कर सकने के कारण उसका जीवन संघर्षमय बन जाता है। इसलिए ऐसी स्त्रियाँ पुर्नविवाह करके भी सुख और संतोष का अनुभव नहीं कर सकती। अंत में पुर्नविवाह से वैवाहिक जीवन असंतुष्ट रह जाता है। क्योंकि पुर्नविवाह से पति और पत्नी दोनों एक-दूसरे के प्रति शाशंक रहते हैं।

वेश्यावृत्ति की समस्या --

प्राचीन काल से नारी का क्षेत्र घर रहा है। परिवार का पालन-पोषण करना और प्रत्येक प्राणि के विकास में सहायक होना ही नारी का प्रमुख उद्देश्य कर्तव्य पालन रहा है। परिवार के लिए अर्थ का प्रबन्ध करना पुरुष का काम रहा है लेकिन असहाय अविवाहित या आर्थिक समस्या से त्रस्त नारी का मन तनिक भी दुर्बल हो तो वह पुरुषों के प्रलोभनों और हथकण्डों के सामने अड़िग नहीं रह सकती। नारी की इस दुर्बलता के कारण ही समाज में वेश्यावृत्ति की समस्या पैदा होती है। पुरुष अपने स्वार्थ में लिप्त होकर अबला नारी की परिस्थितियों का अनुचित लाभ उठाकर उसे बलपूर्वक भ्रष्ट करता है। नारी के पतन पर नारी को जीवनभर बदनामी सहनी पड़ती है।

`पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास की रेणु भटनागर नामक युवती ऐसी ही समाज में बदनाम हो गयी है। रेणु अविवाहित है। घर की गरीबी के कारण और आर्थिक समस्या के कारण वह अर्थ प्राप्ति का अत्यंत घिनौना मार्ग अपनाती है। वह अपने पुरुष मित्रों से पैसे लाती रहती है। यह बात रेणु के चाचा को पता चली तो -` बड़े लाल-पीले हुए। भटनागर साहब ने सब चुपचाप सुन लिया। कहते क्या ? वकालत बिलकुल चलती नहीं। जीने का सहारा तो चाहिए। `[१३] सारा समाज उसकी

१२ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.६१।

१३ - वही - ,, पृ.८२।

अवेहलना करता है। लोग उसे उपेक्षा की नजर से देखते, हँसते है। समस्याओं का उचित समाधान न पाकर युवतियों को भटकने की बहुत अधिक संभावना होती है। इसलिए सुषमा की माँ सुषमा से कहती है -- ` देखो सुषमा, तुम समझदार हो, कभी ऐसा कुछ न करना जिससे किसी को कुछ कहने का अवसर मिले। तुम्हारी वजह से अभी हम चार जनों में सिर ऊँचा करके रह रहे है। `[१४] सुषमा की माँ ने दुनिया देखी है वह एक बुजुर्ग औरत है। इसलिए रेणु जैसी युवतियाँ आर्थिक जरुरतों के लिए अहितकारी मार्ग अपनाती है मगर समाज के लिए एक समस्या है। कलंक है। विकृती है। समाज का यह रोग समाज द्वारा ही प्रयत्नपूर्वक हटाया जा सकता है।

आज समाज में वेश्याओं को` कॉल गर्ल्स ` कहकर पुकारते है यह भी वेश्याओंका भी दूसरा रुप है। समाज में वेश्याओं को या कॉल गर्ल्स को अच्छी दृष्टिसे भी नहीं दिखाया जाता। आज वेशाएँ नये तरीके से इस प्रकाश घर से बाहर निकलती है जैसे रेणु भटनागर की वह कोई कामकाज करने निकलती है, प्रतिष्ठा के आवरण के निचे वे वेश्यावृत्ति का कार्य करती है। अधिकांश महिला इस कार्य को मन से ना अपनाकर मजबूरी में अपनाती है और इस कार्य से जो पैसा मिलता है उससे अपने परिवार को चलाती है। छोटे - भाई बहनों आदि को सभी की सहायता करती है तो समाज के इस सही रुप का चित्रण उषा प्रियंवदाजी ने` पचपन खम्भें लाल दीवारें ` उपन्यास में किया है।

नारी की नारी के प्रति सहानुभूति का ना होना एक समस्या --

आज के युग में नारी का नारी के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। पहले यदि नारी का किसीसे शारीरिक सम्बन्ध होता था और वह गर्भवती हो जाती थी तो लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। लोगों की संवेदनायें उसके प्रति नहीं होती थीं। किन्तु आज ऐसी नारी के प्रति कुछ प्रगतिशील महिलाओं की संवेदनाएँ जाग रही है। --` पचपन खम्भें लाल दीवारें ` उपन्यास की एक अध्यापिका स्वाति सेन नामक

---

१४ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण - १९७६, पृ. ९२।

युवती वह गर्भवती हो जाती है। समाज के डर से वह नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या करना चाहती है। किन्तु वह आत्महत्या नहीं कर पाती। लोग उसकी निन्दा करते है। कोई उसके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित नहीं करता। उधर सुषमा है जो सामाजिक मापदण्डो की आलोचना करती हुई कहती है --" आपके सामाजिक मापदण्ड यह कहते है कि आप सबके सामने किसी व्यक्तिगत की धज्जियाँ उडा दीजिए ? हरेक का जीवन एक ऐसा अनुलंधनीय दुर्ग है, जिसका अतिक्रमण करना किसी का अधिकार नहीं है। यदि आपको पता था कि स्वाति किसी परेशानी में है,तो आपको साहयता करनी चाहिए।" १५

कहा जाता है नारी ही नारी की दुश्मन है यदि नारी से कोई अपराध हो जाए तो उसको नारी ही माफ नहीं करती इसी बात का संकेत ' उषा प्रियंवदाजी ने ' अपने पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में दिया है यदि अनब्याही लडकी गर्भवती हो जाती है उस समय उसको सहानुभूति और साहस जरुरत होती है जो नहीं मिल पाती परंतु आज समाज बदल रहा है और नारी की नारी मन की वेदना को समज रही है और उसके साहयता के लिए आगे आ रही है इसका प्रमाण आज अनेको ऐसो नारी जैसी है।

अकेलेपन की समस्या --

अकेलीपन की समस्या आज के युग की अत्यधिक गंभीर समस्या है। मानव जीवन की सबसे महानतम् त्रासदी यह है, कि व्यक्ति भीड में अकेला होता जा रहा है और जीवन पोषक मूल्यों से निरंतर कटता जा रहा है। इस कटते जाने छटपटाहट को उषा प्रियंवदाजी ने अपने समूचे साहित्य में अत्यंत मार्मिकतासे चित्रित किया है।

प्रस्तुत ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' उपन्यास में नायिका ' सुषमा ' अपनी आर्थिक विवशता के कारण अकेलेपन की शिकार होती है। पारिवारिक दायित्व और सामाजिक बंधन के कारण वह चाहकर भी अपने प्रेमी नील से विवाह

१५ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, तृतीय संस्करण - १९७६, पृ.२९।

नहीं कर सकती कहती है --

` मेरी जिन्दगी खत्म हो चुकी है। मै केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नही। विवाह करके परिवार को निराधार छोड देना मेरे लिए संभव नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिन्दगी के लिए ढाल लिया है। तुम चले जाओ गे,तो मै फिर अपने को उन्हीं प्राचीरों मैं बन्दी कर लूँगी।`[१६] उसकी यह विवशता उसमें अकेलीपन की भावना जगाती है। समाज की कटूतायें उसके मन मैं कडवाहट भर देती है। यह कडवाहट उसमें जीवन के प्रति अलगाव उत्पन्न करती है।....` सबके कुछ कहीं डूब गया था .. जीवन के प्रति उत्साह, परिवार के प्रति मोह, फूलों के रंग, सुषमा अकेली थी, अपने दु:ख,अपमान और लज्जा की गहराइयों मैं भटकती,आर्तचीत्कार करती हुई।`[१७]

आज नारी शिक्षा प्राप्त करके उच्च पदों पर आ सकी धन की कोई कमी नहीं अच्छा जीवन बिता सकती है लेकिन आज समाज मैं दिखा सकता है कि नारी अकेलेपन की समस्या से जूझ रही है। उँचे पदों पर बैठकर भी हिरदे की किसी कोने मैं अपने आप को अकेला महसूस करती समाज की उसी समस्याको सुषमा के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है।

बेरोजगारी की समस्या --

आधुनिक युग मैं शिक्षित बेरोजगारी की समस्या एक गंभीर समस्या बन गयी है। औद्योगिकरण तथा बढती जनसंख्या के कारण आज भारतीय समाज मैं शिक्षित बेरोजगार मैं वृध्दि हो गई है। अब व्यक्ति के लिए नौकरी पाना अत्यंत दुष्कार्य बन गया है। नौकरी प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को काफी कठिनाइयों का सामना करना पडता है ,भटकना पडता है। उषा प्रियंवदाजी के ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की सुषमा को भी इस समस्या से टकराना पडता है। पिताजी कहते है --` नौकरी के लिए उसे कितना भटकना पडा और अब इस नौकरी

---

१६ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली, तृतीय संस्करण,१९७६, पृ.६१।

१७ - वही - ,, पृ.१०६।

पाकर उसे लगा कि तूफान से बचकर उसकी जीवन नौका एक शांत बंदरगाह पर आ पहुँची है। " १८

बेरोजगारी यह एक अभिशाप है बेरोजगारी के कारण परिवार टूट जाते है। बिखर जाते है ऐसे परिवारों में दु:ख और कलह का साहरा गहरा हो जाता है। आज समाज में बहुत से लोग बेरोजगारी का सामना करते इधर उधर भटक रहे है। इसी समस्या को उषा प्रियंवदाजी ने सुषमा के परिवार के माध्यम से बहुत ही खूब सुरतिसे चित्रित किया है।

नारी की उच्चशिक्षा की समस्या --

इस आधुनिक युग में भी नारी की उच्चशिक्षा की समस्या दिखाई देती है। प्रस्तुत 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा की छोटी बहन प्रतिमा डॉक्टर बनना चाहती है, परंतु घर की कठिन आर्थिक परिस्थिति के कारण प्रतिमा कहती है -- "अम्मा हर वक्त रोना रोया करती है, नीरु की शादी, हम सब की पढाइयाँ कहती है कि -- डॉक्टर बनकर क्या करेगी। नीरु के बाद ..." प्रतिमा चुप हो गई। "१९ तो ऐसा सवाल उसे किया जाता है और उसकी सब इच्छा असफल हो जाती है। और भी उसकी उच्चशिक्षा का विरोध इसलिए होता है, कि आगे उसको शादी में बाधा आ जाएगी।

सार रुप में उच्चशिक्षा नारी की समस्या यह आधुनिक युग होकर भी आज भी दिखाई देती है। इसी समस्या को उषाजी ने प्रतिमा, सुषमा के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है।

---

१८ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्मे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ. ३६।

१९ - वही - ,, पृ. ४२।

स्वच्छन्द प्रेम की समस्या --

प्रेम करना यह स्त्री-पुरुष का सहज धर्म है। वह उसकी प्रकृति है। उनका जन्मसिध्द और प्राकृतिक हक्क है लेकिन भारतीय समाज में स्त्री-पुरुषों के सहज सम्बन्धों के लिए कोई स्थान नहीं है। इसलिए स्वच्छन्द प्रेम की समस्या निर्माण होना स्वाभाविक है। ऐसी नारियाँ जो किसी युवक से स्वच्छन्द, मुक्त प्रेम करती है, समाज की नजरों में अपराधी बन जाती है। उनपर अनेक बंधन डाले जाते है। उनकी त्रासदी, संघर्ष और वेदना का ही उषाजी ने चित्रण किया है।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` की सुषमा स्वच्छन्द प्रेम संबंध को अपना नहीं सकती। उसे इस प्रेम के कारण अपनी सहकारी अध्यापिकाओं द्वारा न केवल जलील होना पड़ता है, अपितु नौकरी से इस्तीफा तक देने की नौबत आ जाती है। उसी वक्त मिस शास्त्री ने गुस्से में सुषमा को कहा --
` मै तो कहती हूँ कि जो काम अपने से न सँभले, इन्सान दूसरे को करने दे। तुम्हारा मन नहीं लगता है तो इस्तीफा दे दो। कॉलेज की अड़तालीस अध्यापिकाओं में क्या कोई वार्डन बनने को राजी न होगा। `[२०] नील और सुषमा का प्यार प्रिंसिपल से लेकर अध्यापिकाओं तक और छात्राओं से लेकर नौकर माली तक के लिए चर्चा का एक दिलचस्प विषय है। उनका ताने कसना, हँस देना ये सारी बातें सुषमा के लिए असह्य होती है। इस प्रकार, सुषमा खुली हवा में साँस भी नहीं ले सकती न सहज स्वाभाविक ढँग से अपना व्यक्तिगत जी सकती है। इसी उपन्यास की एक अन्य पात्रा स्वाति सेन है, जिसका जीवन स्वच्छन्द प्रेम की समस्या के कारण बरबाद हो जाता है। अपने असफल प्रेम के कारण उसे आत्महत्या के सिवा कोई मार्ग नहीं सूझाता।

उषा प्रियंवदाजी ने स्वच्छन्द प्रेम की समस्या को उनके ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नील और सुषमा के माध्यम से अच्छे ढंग से चित्रित किया है।

२० ` उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.६५।

कामकाजी महिलाओं की समस्या --

आधुनिक सामाजिक परिदृश्य में नारी की स्थिति में आनेवाले बदल का कारण नारी, पुरुष के समान ही जीवन के सभी क्षेत्रों में कार्यरत रही है। पढी-लिखी नारी ने जब पुरुष वर्ग पर होनेवाली आर्थिक निर्भरता पर विचार किया तब वह अपने चुल्हे-चौकेवाले सीमित दायरे को छोड़कर अर्थाजन करने के लिए विस्तृत समाज में निकल पडी। नीरी के इस पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने की प्रवृत्ति से आज समाज में कामकाजी युवतीयों के विवाह की समस्या गंभीर रुप ले रही है। आज यह भी स्थिति दिखाई देती है, कि अगर किसी परिवार में कमानेवाला पुरुष न हो, तो उस परिवार की कामकाजी ज्येष्ठ पुत्री को ही परिवार का बोझ उठाना पड़ता है। परिवार के उत्तरदायित्व को निभाते हुए उसके विवाह का प्रश्न ही बुझ जाता है। उम्र का एक दौर तो यौवन-सुलभ भावुकता में गुजर जाता है,लेकिन उम्र की उत्तरावस्था में उसके समूचे अस्तित्व को निर्दय एकाकीपन डस जाता है, जिससे वह घुटन ,पीडा एवं संत्रास से पीड़ित हो जाती है। परिणामत: उसमें मानसिक विकृति निर्माण होती है। ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास की मिस दुर्गा शास्त्री इसका उदाहरण है ...` तप्त धरती की तरह मिस शास्त्री,जिनकी निराशाओं ने उनका जीवन के प्रति पूरा दृष्टिकोण विकृत कर दिया।` २१

इस उपन्यास की सुषमा अभी इस स्थिति तक नही पहुँची है, पर उसके टूटने की शुरुआत हो गयी है। वह अपने भविष्य की भयंकर परछाइयों को भाँप चुकी है। वह मीनाक्षी से कहती है ...` पैतालिस साल की आयु में मै भी एक कुत्ता या बिल्ली पास पाल लूँगी। उसे सीने से लगा रखूँगी ... आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर इस कॉलेज में आओ,तब भी तुम मुझे यही पाओगी। कॉलेज के पचपन खम्भों की तरह स्थिर अचल।` २२

---

२१ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, चतुर्थ संस्करण,१९८४,पृ.६३।

२२ - वही - ,, पृ.१०६।

सार रुप में अविवाहित कामकाजी नारियों को अपने परिवार के उत्तर दायित्व को निभाते हुए अनेक समस्याओं को कैसे सामना करना पड़ता है इसका चित्रांकन उषा प्रियंवदाजी ने अपने उपन्यास में सुषमा के माध्यम से चित्रित किया है ।

विधवा नारी की समस्या --

प्राचीन काल में ` एक पुरुष की अनेक पत्नियाँ होती थी । पति की मृत्यु के बाद वे सभी स्त्रियाँ विधवा हो जाती थी`, किन्तु अनुमरण का अधिकार केवल जेष्ठा को होता था । विधवा माता का परिपालन न करनेवाला पुत्र निन्दनीय माना जाता था ।`[२३]

उस समय की मान्यता थी --` वैधव्य पूर्व जन्म के पाप का फल है ।`[२४] यह नारियों की वैधव्य सम्बन्धी धारणा थी - विधवायें सर्व कल्याण वर्जिता मानी जाती थी ।`[२५] विधवा से लेन देन का व्यवहार अनुचित माना जाता था ।`[२६] विधवा भगिनी का पालन पोषण का भार भाई पर रहता था । लेकिन आज के युग में विधवा नारी भी स्वतंत्र जी सकती है । जैसे` पचपन खम्भे लाल दीवारें` उपन्यास में उषा प्रियंवदाजी ने मिसेज रायचौधरी के रुप में एक विधवा नारी का चित्रण किया है । वह पति की मृत्यु के बाद मकान के किराये से अपना खर्च चलाने का विचार करती है क्योंकि उनकी एक ही बेटी बूनी के विवाह के बाद अकेली रह जाती है । वह कहती है --` वहमन ही मन हिसाब लगाने लगी कि मकान को किराये पर उठा देने से कम-से-कम दो सौ रुपये तो मिलेंगे ही । यहाँ मकान मिलेगा और सौ रुपये अलाउस ` खाना वह स्वंय बना लेगी और छात्रावास के नौकर अन्य काम कर देंगे --

२३ आरण्यक - २७७,३५ ।
२४ आदि पर्व- ११२,२६ ।
२५ अनुशासन २२२,७
२६ अनुशासन उद्योग -३७,२८

(२५–२६) डॉ.शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में सामाजिक सन्दर्भ - विधा - विहार प्रकाशक,प्रथम संस्करण,१९८७, पृ.७४ ।

कुल मिलाकार फायदा ही रहेगा । ` २७

समाज में आज भी विधवाओं का जीवन अभिशाप है, उनको समाज में मान सम्मान नहीं मिलता यदि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नही है तो और भी मुसिबत का सामना उठाना पड़ता है ऐसी ही एक विधवा की स्थिति का सही अंकन मिस राय चौधरी के माध्यम किया है ।

नैतिकता की समस्या --

वर्तमान समय में हमारा समाज नैतिक दृष्टि से पतनोन्मुख हो गया है । नैतिक मूल्य भ्रष्ट हो चुके है जिस समाज के व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्व की अवहेलना करें, स्वहितार्थ, असामाजिक कार्यों में संलग्न रहें उस समाज की उत्थान की आशा तो दूर कल्पना भी नहीं की जा सकती । ऐसा समाज भ्रष्टाचार की भँवर में गहरे और गहरे धँसता, अन्त में लुप्त हो जाता है । हमारा वर्तमान समाज अब अनैतिकता ने शनैः शनैः अपना साम्राज्य बढाते हुए काफी प्रसार पा लिया है । नैतिक मूल्यों के विघटन से आज सम्पूर्ण मानव त्रस्त होकर हाहाकार कर रहा है, एवं इस अन्धे कुए से निकलने हेतु छटपटा रहा है । और इस नैतिक मूल्यों को पुन: प्रतिष्ठित करें । नैतिकता के पुन: प्रतिष्ठापन हेतु हमें क्या करना होगा ? इस संदर्भ में --` पचपन खम्भें लाल दीवारें ` उपन्यास में उषाजी ने लिखा है --` सुषमा को लगा जैसे वह शरशैय्या पर लेटी हैं । बुरी तरह बिंधी हुई, दारुण यंत्र से छटपटाती हुई । उसके चारों तरफ का वातावरण उसके हृदय पर ऐसा भारी बोझ बनकर जम गया था जिसमें नील का स्पर्श, नील की आँखों की कोमलता, धुँधली पड जाती थी । दुख के इन क्षणों में वह नितांत अकेली थी और आँखों की सजलता में उसे नील का बढा हुआ हाथ भी न दिखाई देता था । सब कुछ डूब गया था -- जीवन के प्रति उत्साह परिवार के प्रति मोह, फूलों के रंग, सुषमा अकेली थी, अपने दु:ख, अपमान

२७ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भें लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.९० ।

और लज्जा का गहराईयों में मटकती अतिचीत्कार करती हुई। " २८

उषा प्रियंवदाजी ने अपने पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में नैतिक मूल्यों को भी दिखाया है। आज समाज में नैतिक मूल्य पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई है कुछ लोग उनका यह जान से पालन करते है जैसे सुषमा अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझाती ही नील से विवाह ना करके अपने परिवार के भरण-पोषण का सारा दायित्व अपने उपर ले लेती है इसका सुन्दर चित्रण प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में हुआ है।

मनोवैज्ञानिक समस्या --

प्रस्तुत उपन्यास ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` में उषा प्रियंवदाजी ने एक अविवाहित प्रौढ कुमारिका की मनोवैज्ञानिक समस्या को चित्रित किया है। वह है उपन्यास की नायिका सुषमा है। सुषमा उच्चशिक्षित आधुनिक विचारों की युवती है। उनका व्यक्तित्व, स्वस्थ आकर्षक है। साधारण युवती की प्रकृति के अनुसार उसकी भी कुछ इच्छाएँ और सपनें है। उसके मन में विवाह करके गृहस्थी बसाने की इच्छा है। परंतु घर की आर्थिक स्थिति बिगडी हुई है। इसलिए सुषमा को नौकरी करके घर की जिम्मेदारी सँभालनी पडती है। सुषमा की आय ही घर का आधार होने के कारण माता-पिता सुषमा की शादी की बात सोच नहीं सकते। सुषमा एक दुष्टचक्र में फँस जाती है। उससे वह अपने-आप को मुक्त नहीं कर पाती। नील, सुषमा का मित्र है, जो फिलिप्स फर्म में काम करता है वह सुषमा की सब जिम्मेदारीयों को अपनाने के लिए तैयार है। परंतु नील सुषमा से पाँच साल छोटा है और सुषमा अपने को नील के काबिल नहीं समझाती। उसे यह भी एक डर है कि भविष्य में शायद नील को सुषमा से शादी करने का पछतावा हो जायेगा। अपनी बढती उम्र के कारण वह कहती है --

---

२८ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ. १०६।

'तुम्हारी अभी आयु ही क्या है। मैं तुमसे इतनी बडी भी तो हूँ नील। हमारा विवाह कभी सफल न होगा। मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कहीं कोई बहुत छोटी, बहुत सुन्दर लडकी मुझसे तुम्हें न छीन ले।'[२९] और भी उसे आशंका है। नील जैसे उच्चवर्गीय अमीर और ज्योतिर्मय भविष्य रखनेवाले युवक के जीवन में सुषमा जैसी सामान्य बंदिस्त एवं घुटी हुई जिंदगी जीनेवाली स्त्री का आना सुषमा अनुचित समझती है। सुषमा के कारण भविष्य में यदि नील असंतुष्ट रहने लगेगा, तो फिर सुषमा भी अपराध भावना को महसूस करने के कारण कभी सुखी नहीं हो पाएगी। सुषमा को यह निश्चित धारणा है कि नील और उसका विवाह हर दृष्टिसे अनमेल विवाह होने के कारण कभी सफल नहीं हो सकेगा। सभी बातों का गंभीरता से विचार कर सुषमा नील से दूर हो जाने तथा अविवाहित रहने का निर्णय ले लेती है। सुषमा स्वार्थी मनोवृत्ति की नहीं है कि घर के स्वास्थ और खुशी को कुचलकर अपना आनंद ढूँढती अत: सुषमा की समस्या का कोई समाधान नहीं है। सुषमा की मनोवैज्ञानिक समस्या बडी गंभीर है।

इसी ही उपन्यास की अन्य पात्र मिस शास्त्री अविवाहित होने के कारण दूसरों का सुख भी नहीं सुहाता, अपनी सहेली सुषमा और नील के संबंध के बारे कॉलेज बवंडर उठा देना, वार्डनशिप की नौकरी छिनना, छात्राओं के चाल-चलन पर कडी नजर रखना, उनपर आरोप लगाना, उनके बाय-फ्रेंड्स की खबर रखना, छात्राओं की चिट्टियाँ पढना, मेट्रन को उल्टी-सीधी सलाह देना, समय-असयपर डाँटते रहना, तो मिस शास्त्री एक विकृत मनोवृत्ति की नारी दिखाई देती है। अपने अधूरे, अतृप्त जीवन के कारण उसने बहुत दु:ख झेले है। अपने जीवन की निराशाओं ने पुरे जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोन विकृत बना दिया है। उन्होंने अपने जीवन का सारा संचित स्नेह और प्यार एक पालतु बिल्ली तक ही सीमित रखा है। मिस शास्त्री अपने एकाकी रसहीन, शुष्कजीवन के खालीपन को भरने के लिए लोगों का उपयोग एक साधन के रुप में करती है। अनायास द्वेष और इर्षा- उसकी प्रकृति की अस्वाभाविक

---

२९ उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें -- राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.११४।

मनोविकृती है। इसलिए मिस शास्त्री यह एक समाज के लिए बडी बहुत मनोवैज्ञानिक समस्या है। क्योंकि ऐसी स्त्रियों को समाज में विधायक और सरल रास्ते पर कैसे लाया जाय यह एक बहुत बडा प्रश्न है।

` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। सुषमा के माध्यम से उषा प्रियंवदाजी नारी के मनोविज्ञान को दिखाया है। सुषमा के मन में भी इच्छाएँ है, आकांक्षाएँ है पर वे पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्हें दबा देती है। पर किसी न किसी रुप में वह प्रस्फुटीत हो जाती है। वैसे ही मिस शास्त्री उन्हीं के भावनाओं को बहुत ही कुशलतासे उपन्यास में दिखाया गया है। एक प्रौढा कुमारी का आचरण कैसा हो जाता है,कैसे ओ सोचती है, कैसे तनाव में जिती है इसका सही अंकन इस उपन्यास में हुआ है।

<u>आर्थिक समस्या</u> --

आर्थिक समस्या यह बहुत बडी समस्या है। यह समस्या हम पैदा होने से ही देखते है इसलिए यह समस्या कोई नयी समस्या नहीं है। वैसे ही प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में उषाजी ने अत्यंत गंभीरतासे नारी की आर्थिक समस्याओंको दिखाया है। नारी को आर्थिक रुप से स्वतंत्र होना चाहिए था परंतु नारी पैसा कमाने के लिए इसलिए विवश होती है कि वह उसकी जरुरत बन जाती है। जब घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही डाँवाडोल हो जाती है तभी नारी मजबूरन, घर से बाहर निकलकर नौकरी करने लगती है। नौकरी करने के पीछे उसका उद्देश्य एक टक के रुप में,आर्थिक स्वतंत्रता को प्राप्त करने का नहीं होता।

आर्थिक स्वतंत्रता से ही उसकी परवशता मिट सकती है,उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तित्व का विकास होकर वह पुरुष के समकक्ष खडी हो सकती है। परिवार को आर्थिक स्थिति एवं विपन्नता या साधन हीनता के कारण भी पति-पत्नी दोनों के मन में अपने जीवन के प्रति खीझ और असंतोष उत्पन्न हो जाता है। तो कभी-कभी वैवाहिक जीवन की विसंगति के मूल में आर्थिक विषमता भी होती है। आर्थिक रुप से स्वतंत्र हुए बिना नारी अपनी दासता की जंजीरों से पूर्णता मुक्त नहीं

हो सकती । नारी की समस्या परंपरा से चली आयी गुलामी है और यह गुलामी का प्रधान कारण आर्थिक रुप है। इसका उदाहरण प्रस्तुत -' पचपन खम्मे लाल दीवारें' उपन्यास में दिखाई देते है। -- उपन्यास में नायिका सुषमा की सामाजिक और मानसिक समस्या का कारण उसकी प्रतिकूल आर्थिक स्थिति है। सुषमा की शादी इसलिए नहीं हो सकी क्योंकि उसके माता-पिता के पास दहेज के लिए पैसे नहीं थे। सुषमा आर्थिक समस्या के कारण जब एक प्राइवेट कॉलेज में नौकरी कर रही थी तब वहाँ के रईस सेक्रेटरी ने सुषमा को अनेक वस्तुओं के प्रलोभन दिखाए थे। परंतु सुषमा ईमानदारी स्त्री होने के नाते उन्होंने वह नौकरी छोड दी, लेकिन नौकरी छोड देने से उठ खडी हुई आर्थिक समस्या के कारण सुषमा की माँ उसपर नाराज होकर कहती है --' और इन बच्चों का क्या होगा ?'[३०] घर की आर्थिक स्थिति और सब जिम्मेदारी की यातना सुषमा की माँ उसपर ही डालती है। सुषमा की माँ सुषमा को अपने परिवार के आर्थिक संकट को दूर करने का साधन बना डालती है। अपनी बेटी सुषमा की शादी एक धनी वकील के साथ कर देना चाहती थी क्योंकि जिन्दगी ने उन्हें चूस लिया है, निचोड लिया है इसलिए वह धनिक के हाथों बेचना चाहती है। सुषमा घर की सब जिम्मेदारीयोंसे अपने आप को मुक्त नहीं कर सकती क्योंकि सुषमा की आय ही घर की प्रमुख आधार होने के कारण सुषमा के माँ-बाप उसकी शादी सोच कर भी उसपर अमल नहीं कर पाते सुषमा भी बिलकुल स्वार्थी वृत्ति की नहीं है कि घर के स्वास्थ और खुशी को कुचलकर अपना आनंद ढूँढे तो इस प्रकार सुषमा की यह आर्थिक समस्या समाधान रहित है।

वैसे ही और एक अन्य पात्र रेणु भटनागर जिसपर ही घर की आर्थिक समस्या को हल करने की जिम्मेदारी आ जाती है तो वह अर्थप्राप्ति के लिए अत्यंत घिनौना मार्ग अपनाती है। वह अपने पुरुष दोस्तों से पैसे लाकर सब परिवार की जीविका चलाती है।

---

३० उषा प्रियंवदा - पचपन खम्मे लाल दीवारें - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९७६, पृ.सं.६१ ।

पचपन सम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास का ढाँचा ` आर्थिक ` आधार पर ही खडा किया गया है। यदि सुषमा के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छि होती तो उसका विवाह होता वह अपने परिवार में ठिक से रहती इसी प्रकार उपन्यास में जितनी भी समस्याएँ दिखायी गयी है। वे धन के कारण ही है। यह एक कठू सच्चाई है जिसकी ओर उषा प्रियंवदाजी ने संकेत किया है।

पारिवारिक समस्या --

मानव समाज का इतिहास परिवार का ही इतिहास है। परिवार ही समाज की प्रारम्भिक इकाई है। परिवार के बिना समाज की निरन्तरता संभव नही है, क्योंकि परिवार ही नये बच्चों को उत्पन्न करता है,जो मृत लोगों का रिक्त स्थान भर देता है इस प्रकार परिवार द्वारा मृत्यु और अमरत्व,दो विरोधी अवस्थाओं का सुन्दर समन्वय हुआ है। लेकिन यह परिवार कई प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण तथा परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्धो के कारण पारिवारिक समस्या बन जातो है। इसलिए उषा प्रियंवदाजी ने प्रस्तुत ` पचपन सम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में दिखाया है। उपन्यास की नायिका सुषमा परिवार की सबसे बडी लडकी है। पिताजी बीमार होने के कारण उसे नौकरी करनी पडती है। अपने छोटे दो भाइयों को पढाने तथा बहनों की पढाई और शादी कर देने की जिम्मेदारी उसी पर आ जाती है। परंतु इसी वजह से पिता और माता चाहने पर भी सुषमा की शादी नही करसकते। अविवाहित सुषमा इन प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण मन ही मन घरवालों से एक सुखाभाव रखने लगती है। माँ के प्रति सुषमा कुछ खिंची-सी रहती है। पिता के प्रति भी उसके मन में अनेक शिकायते है। परंतु फिर भी वह अपने माता-पिता को समझने की क्षमता रखती है। यथा संभव वह उनका दिल न दुखाने का खयाल रखती है। अपने भाई-बहनों के साथ भी अच्छे संबंध है। कभी-कभी अपने जीवन में सुख का अभाव उसे कठोर और कटु बना देता है परंतु फिर भी वह एक बडे परिवार की महत्वपूर्ण और ममतालु सदस्य है। सुषमा की माँ,अपने पति की

दूसरी पत्नी है। आर्थिक अभाव के कारण वह अपनी इच्छा और आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकती और इसी कारण अत्यधिक व्यावहारिक और धन दौलत के प्रति लालायित बन जाती है। वहपति की बीमारी तथा बडी बेटी के जिद्दी स्वभाव के कारण हमेशा खीझ और त्रास से भरी हुई रहती है। अत: परिवार की शांति और संतोष नष्ट हो जाता है।

सुषमा के मित्र नील के परिवार की यह समस्या है कि नील की मां नील की शादी अपनी मर्जी से ऊँचे खानदान में कराना चाहती है। परंतु नील सुषमा से प्यार होने के कारण कहीं और शादी करने के लिए तैयार नहीं होता। नील के इस व्यवहार से गुस्सा हो जाती है और सुषमा के मौसी से झगडा करती है।

ऐसे परिवार जिसमें परिवार का मुखिया कुछ काम नहीं करता बेरोजगारी है बच्चे ज्यादा है ऐसे परिवार समस्याग्रस्त परिवार बन जाते है और ऐसे परिवारों में जो भी बडा बच्चा होता है चाहे वह लडकी हो या लडका उसपर ही परिवार का बोझ आपडता है। इसके अतिरिक्त विधवाओं का भी परिवार की अपनी अलग ही समस्या होती है। उन सभी समस्याओंको `उषा प्रियंवदाजी` ने प्रस्तुत` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में दिखाया है। वैसे परिवार हम समाज में अपनी चारों ओर देखते है।

निष्कर्ष --

इस प्रकार हम सार रुप में देखते है कि ` उषा प्रियंवदाजी ने ` प्रस्तुत ` पचपन खम्भे लाल दीवारें ` उपन्यास में विवाह पूर्व की समस्याओंके साथ ही साथ विवाहोत्तर समस्याओं के अन्तर्गत दहेज,वर मूल्य आदि पर अपने विचार व्यक्त किये। दहेज के संदर्भ में लोग उसके प्रतिकार की बातें तो करते है लेकिन इस दानव के उन्मूलन के लिए स्वंय आगे नहीं बढते।

विवाह के सम्बन्धी भी दृष्टिकोण आज बदलने लगे है। इसलिए आज की नारी यह कहने में कोई संकोच नहीं करती कि जीवन में विवाह मात्र ही महत्वपूर्ण नहीं है, दूसरे देशों में नवयुवतियाँ अविवाहित रहकर भी सुखमय जीवन व्यतीत कर

रही है। आज युवती यह भी समझने लगी है कि सिर्फ जिस्म से ही विवाह करना, बिना इच्छा के विवाह करना अथवा पति को ही शरीर समर्पण करना अमानवीय है। वैवाहिक जीवन में विवाह बोध भी एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, जिसके अभाव में कोई भी विवाह असफल हो जाता है। अनमेल विवाह के संदर्भ में उषा प्रियंवदाजी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि ऐसे विवाह असफल ही होते हैं। वैभिन्न चाहे मानसिक हो, चाहे वय सम्बन्धी, चाहे आर्थिक, वह किसी भी दृष्टि में उचित नहीं है। इस प्रकार किसी एक निर्णय पर उषा प्रियंवदाजी अभी तक नहीं पहुँच सकी है और इसलिए इस प्रकार के विवाह अभी भी प्रस्तुत ' पचपन खम्भे लाल दीवारें ' में सफलता और असफलता के बीच झूल रहे हैं।

पुनर्विवाह के सम्बन्ध में प्राय: आवश्यकता पर बल दिया है।

वेश्या को नारी जीवन की विवशता और नरक मानते हुए उषाजी ने उध्दार की बात की है और प्रथा को समाप्त करने पर बल दिया है।

परिवार के बारे में उषाजी ने स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में टूटती और बिखरती हुई नारी का चित्रण किया है।

स्त्री-पुरुष की स्पर्धा की दौड को उषाजी ने असंगत माना है। आर्थिक समस्या को सुलझाने, अपनी जीविका चलाने तथा अपनी जिम्मेदारियों को ढोने के लिए नारियाँ एक जरुरत के रुप में नौकरी कर रही है।

लेकिन समाज उसे अच्छी तरह से नौकरी भी नहीं कर देतें, तो नौकरी की समस्या को भी उन्होंने दिखाया है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदाजी आज के किशोर - किशोरियोंकी स्थिति पर, वैवाहिक जीवन पर एवं एतद सम्बन्धी सभी पारिवारिक समस्याओं पर अपनी लेखनी निर्भीकता एवं सफलतापूर्वक चलाई है।